विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् सह शैक्षणिक गतिविधियां

ता:-१०/०७/२०२० शिक्षक श्यामउदय सिंह

एक नगर में एक महात्मा रहते थे।उनके खाने की व्यवस्था सभी गांव वाले करते थे। सभी ग्रामीण उन्हें खिलाने के अपनी बारी इन्तजार करते थे।जिन्हें बारी मिल जाती थी , वह अपने को भाग्यवान समझता था।एकवार एक युवक की बारी आई । महात्मा ने उस दिन उस युवक को ही स्वयं को खिलाने का अवसर प्रदान किया।निश्चित समय जब महात्माजी उस युवक के घर भोजन करने गये तो वह युवक घर पर नहीं था। युवक के घर ताला लगा हुआ था।महात्मा जी वापस आ गए। रातभर भूखे रहे ।पुन: एकबार उसी युवक की बारी आई। महात्माजी पुन: उस युवक के यहां भोजन करने चला । इसबार युवक घर पर ही था ।महात्मा को देखकर भी युवक ने उनका नजर अन्दाज किया । पुन: तीसरी बार उसी युवक की बारी आई।और महात्मा जी ने उस युवक के यहां भोजन करने के लिए तैयार भी हो गये।अब युवक को रहा नही गया ।वह महात्मा के चरणों गिरकर कहा-"महात्मन ! आप मुझ धोखेबाज पर क्रोध न कर,दण्ड न देकर , तीसरी बार भी मेरा आतिथ्य स्वीकार कर रहे है। मुझे दण्ड दें भगवन दण्ड । महात्मा ने युवक को गले से लगा लिया और कहा -जो कार्य बिना दण्ड दिए सम्पन्न हो जाय उसके लिए दण्ड देने की क्या जरूरत है।